दृश्य–श्रव्य (दूरदर्शन) माध्यम में हिन्दी की प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियाँ

विनोद कुमार*

दृश्य–श्रव्य माध्यम का संबंध ज्ञान प्राप्ति के दृगेन्द्रिय एवं श्रवणेन्द्रिय साधनों से है। यह मूलतः संचार एवं संप्रेषण का साधन है। अपने लघु रूप में यह सामान्य सूचना प्राप्ति का वैयक्तिक संचार माध्यम है तथा वृहत् सरोकारों के संदर्भ में यह जनसंचार माध्यम है। दृश्य–श्रव्य माध्यम, संचार के वे सभी माध्यम हैं, जो भाषा के 'ध्वनि–प्रभावों' तथा 'दृश्य प्रभावों' के मिश्रित भाषिक आयामों का प्रयोग, संचार–उद्देश्यों के लिए करते हैं। इनमें भाषा के 'स्वनिम' एवं 'रूपिम' स्वरूपों का तार्किक तथा व्यावहारिक समंजन प्राप्त होता है तथा ये अनिवार्यतः एक दूसरे के पूरक होते हैं। संचार की जीवंत प्रकृति के प्रतीक इस माध्यम की विविधता की एक पूरी श्रृंखला है। इसमें नाटक, सिनेमा, दूरदर्शन (टीवी), केबल टेलीविज़न, डीटीएच, कम्प्यूटर, स्मार्टफोन, मल्टीमीडिया आदि विविध माध्यम शामिल हैं। इन सभी में सर्वसुलभ, अत्यधिक प्रसारयुक्त तथा जनप्रिय माध्यम 'दूरदर्शन' है। यहाँ 'दूरदर्शन' का अर्थ सरकारी चैनल मात्र नहीं है अपितु इसका सम्बन्ध निजी चैनलों के वैविध्य से भी है।

'दूरदर्शन', 'टेलीविज़न' शब्द का पर्याय है, जिसका अर्थ है 'दूर से देखना'। भारत में यह पद अपने 'अर्थसंकुचित' रूप में राष्ट्रीय चैनल के लिए प्रचलित है। इस संबंध में 'डॉ. हरिमोहन स्पष्ट करते हैं कि ''दूर–दर्शन शब्द 'टेलीविजन' (Tele-Vision, T.V.) का पर्याय है, न कि 'दूरदर्शन' (Doordarshan) का। हमारे विचार से 'टेलीविजन' को हिन्दी में 'दूर–दर्शन' (हाईफ़न लगाते हुए) लिखना उचित है, 'दूरदर्शन' नहीं।'' इसकी अवधारणा स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि 'टेलीविज़न' शब्द ग्रीक तथा लैटिन भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है –'टेली' (Tele) और 'विज़न' (Vision)। 'टेली' ग्रीक शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– दूरी पर (Far off), जब कि 'विज़न' लैटिन शब्द है, जिसका आशय है, देखना (मैं देखता हूँ)। इस प्रकार इसके लिए हिन्दी में सर्वाधिक उपयुक्त शब्द निर्मित हुआ 'दूर–दर्शन'। 'दूर–दर्शन' का सामान्य अर्थ हुआ, 'दूर से देखना' या 'दूर के दर्शन'। यद्यपि व्यावहारिक तौर पर उपर्युक्त अर्थ में ही हाईफन रहित 'दूरदर्शन' स्वीकृति पा चुका है। दूरदर्शन (बिना हाईफ़न लगाए) हमारा भारतीय जनसंचार उपक्रम है। बोलने में इसे 'टीवी' या 'टेलीविज़न' ही कहें तो इसे 'दूरदर्शन' मात्र समझने के भ्रम से बचा जा सकता है।

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा छावनी मोहल्ला, वार्ड न0 9, भभुआ, कैमूर

दूरदर्शन पर हिन्दी की प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियों का निहितार्थ हिन्दी भाषा की विविध प्रयुक्तियों तथा भाषिक विकल्पनों से है। भाषा की यह प्रयोजनीयता, विविध रूपों में प्रकट होती है। विद्वज्जन, विभिन्न आधारों पर इसके विविध प्रयोजनों को संकेतित करते हैं। 'प्रो0 दिनेश प्रसाद सिंह' भाषा अध्ययन की सुविधा के लिहाज से इसके दो संदर्भ बताते हैं। पहला 'प्रयोजनपरक सन्दर्भ' और दूसरा 'संरचनापरक सन्दर्भ'। एक भाषा की सम्प्रेषणीयता तथा संचार संबंधी कार्यों से संबंधित है, तो दूसरा भाषा के रूपिम, स्वनिम तथा विविध भाषावैज्ञानिक आधारों पर, उसकी रचना–विधान की जानकारी के विश्लेषण से संबंधित हैं। हिन्दी में जुडा यह विशेषण पद, 'प्रयोजनमूलक', हिन्दी के प्रयोगात्मक पक्ष को ध्वनित करता है। 'प्रयोजन' तथा 'मूलक' पदों के योग से निष्पन्न यह पद, हिन्दी भाषा की प्रयोजनीयता का इंगित है। डॉ0 दंगल झाल्टे इसे 'अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान (Applied linguistics) के अन्तर्गत विकसित अत्याधुनिक, बहुआयामी तथा बहूपयोगी शाखा' के अन्तर्गत स्वीकार करते हैं।

दृश्य–श्रव्य माध्यमों में हिन्दी की प्रयुक्तियों का तात्पर्य, इस माध्यम में भाषिक विकल्पनों (Variations)पर आधारित इसके विविध कार्यक्रमों से है। इसका निर्धारण भाषाविद हैलिडे की प्रयुक्तियों के तीन आयामों के आधार पर किया जा सकता है' –

1 :– **वार्ता क्षेत्र (field of discourse)**
2 :– **वार्ता प्रकार (mode discourse)**
3 :– **वार्ता शैली (style of discourse)**

उपर्युक्त आयामों के अन्तर्गत भाषा–प्रयोग के प्रयोजनगत क्षेत्र, यथा मनोरंजन, वाणिज्य, तकनीक, वैज्ञानिक आदि, वैयक्तिक अथवा जनसंचार एवं भाषा की विविध शैलिया सम्मिलित हैं। हिन्दी के इन्हीं आयामों का दूरदर्शन में प्रयुक्ति परक दिग्दर्शन होता है। दृश्य–श्रव्य केसर्वाधिक लोकप्रिय एवं व्यापक पहुँच वाले इस माध्यम का भारत में आगमन भले ही देर से और अपने सीमित व्यवहारों के साथ हुआ हो, किंतु समयांतर में इसका प्रभाव, समयसीमा, क्षेत्र, तथा कार्यक्रमों की विविधता के संदर्भ में व्यापक होता गया। इसका सर्वाधिक लाभ हिन्दी को मिला। 'एक राष्ट्र, एक भाषा' के तमाम विवादों के बावजूद, प्राकारांतर से हिन्दी का विकास, सांवैधानिक रूप से राष्ट्र की 'राजभाषा' तथा व्यवहारिक स्तर पर 'राष्ट्रभाषा' के तौर पर होता गया। दूरदर्शन माध्यम के विविध चैनलों पर भी हिन्दी भाषा के विविध कार्यक्रमों की पूरी श्रृंखला प्रसारित होने लगी।

अपने प्रारम्भिक काल की अपेक्षा वर्तमान दूरदर्शन माध्यम अधिक समुन्नत, गत्यात्मक, प्रभावशाली तथा विषयनिष्ठ हो चुका है। हिन्दी के हजारों चैनलों के साथ–साथ देशी–विदेशी चैनलों की भरमार है। विविधतापूर्ण कार्यक्रमों के साथ विषयनिष्ठ कार्यक्रमों की भरमार है। इसमें मनोरंजन, समाचार, फिल्म, कृषि, इतिहास, शैक्षिक, वन्यजीवन, आध्यात्मिक आदि विविध प्रकार के कार्यक्रमों वाले चैनल आज दूरदर्शन की शोभा बढ़ाते हैं। और इनकी सबसे बड़ी ख़ासियत है कि ये सभी, सम्बन्धित विषयों के लगभग 24 घंटों के प्रस्तोता हैं। इन सभी कार्यक्रमों को दूरदर्शन के उत्पाद कहें या भाषिक आधार पर हिन्दी की प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियाँ, दोनों ही उचित हैं। इस आधार पर यदि इन उत्पादों/प्रयुक्तियों की सूची बनाई जाए तो वो निम्नवत होंगी –

1. विज्ञापन
2. समाचार
3. धारावाहिक
4. फीचर फिल्म
5. शैक्षिक कार्यक्रम
6. आध्यात्मिक कार्यक्रम
7. साहित्यिक कार्यक्रम
8. गीत–संगीत के कार्यक्रम
9. वृत्तचित्र
10. टेलीड्रामा
11. सीधे प्रसारण
12. खेल सम्बन्धी कार्यक्रम
13. टेली पत्रिका
14. रियलिटी शोज
15. टेलीफिल्म
16. व्यावसायिक कार्यक्रम
17. कृषि सम्बन्धित कार्यक्रम
18. वन्य जीवन संबंधी कार्यक्रम
19. विभिन्न तरह के प्रतियोगितात्मक कार्यक्रम
20. नाट्य रूपांतरण
21. विज्ञान एवं तकनीकी सम्बन्धी कार्यक्रम
22. वार्ता कार्यक्रम
23. साक्षात्कार
24. अनुवादित कार्यक्रम

उपर्युक्त कार्यक्रमों की सूची, दूरदर्शन की सर्जनात्मकता के विस्तृत फलक की एक बानगी है। सूचना–संचार के इस अति प्रयोजनवादी युग में दूरदर्शन वह सशक्त माध्यम है जिसकी पहुँच का दायरा अति विस्तृत है। आज इसकी पहुँच समाज के प्रत्येक वर्ग तक है और यह आज के दौर का सर्वाधिक सरल, सहज, और सर्वत्र सुलभ माध्यम है। इसकी इसी विषेशता ने इसे सर्वाधिक लोकप्रिय और व्यापक बना दिया। प्रत्येक वर्ग के, प्रत्येक आयु तथा रुचि, वर्ग के अनुसार कार्यक्रम उपलब्ध हैं। हिन्दी के विशाल दर्शक वर्ग और उनकी विविध आवश्यकताओं के अनुरूप उपर्युक्त कार्यक्रमों को विशिष्ट प्रयोजनपरक लक्षणों के आधार पर वर्गीकृत करें, तो इसे चार विभागों में समेकित किया जा सकता है।

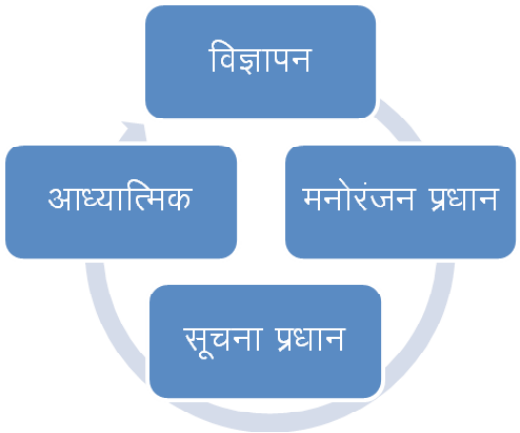

उक्त सूची में विज्ञापन, मनोरंजन प्रधान, सूचना प्रधान, और आध्यात्मिक कार्यक्रमों के चार विभाग निर्धारित किए गए हैं। नवीन प्रवृत्तियों के आधार पर कार्यक्रमों की सूची लम्बी हो सकती है, तो सूक्ष्म निरीक्षण और विषिष्ट लक्षणों के आधार पर उनके वर्गीकरण में विविधता हो सकती है।

विज्ञापन स्वयं में एक महत्वपूर्ण और सर्वप्रधान प्रयुक्ति है क्योंकि इसका विस्तार पटल किसी भी माध्यम के लिए अत्यंत वृहत् है। यह किसी भी माध्यम और किसी भी कार्यक्रम की संगति कर सकता है या करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात है, कि यह किसी भी माध्यम का आर्थिक पक्ष है।

मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों के तहत धारावाहिक, गीत–संगीत कार्यक्रम, साहित्यिक कार्यक्रम, फीचर फिल्म, टेलीड्राम, रियलिटी शोज, टेलीफिल्म, विभिन्न तरह के प्रतियोगितात्मक कार्यक्रम, नाट्य रूपांतरण आदि विविध प्रयुक्तियाँ शामिल हैं।

सूचना प्रधान कार्यक्रमों के विभाग में समाचार, टेली पत्रिका, सीधा प्रसारण, व्यावसायिक कार्यक्रम, कृषि सम्बन्धित कार्यक्रम, वन्य जीवन संबंधी कार्यक्रम, विज्ञान एवं तकनीकी सम्बन्धी कार्यक्रम, वार्ता कार्यक्रम, साक्षात्कार, अनुवादित कार्यक्रम आदि आता हैं। शैक्षिक कार्यक्रमों की श्रेणी में विविध विषयगत पाठ्यक्रमों से संबंधित कार्यक्रम होते हैं जो इग्नू आदि के द्वारा निर्मित एवं संपादित होते हैं। इसके अतिरिक्त वे मनोरंजन पूर्ण कार्यक्रम जो किंडरगार्टेन पद्धति पर आधारित रूप में विविध विषय से संबंधित जानकारियाँ प्रदान करते हैं, वे भी इसमें शामिल हैं।

आध्यात्मिक प्रयुक्तियों के अंतिम वर्गीकरण में भजन, प्रवचन, या अन्य आध्यात्म से जुड़े कार्यक्रम हैं, जो भक्ति–भाव एवं धार्मिक–आध्यात्मिक आधार पर निर्मित एवं प्रसारित हैं।

उपर्युक्त समस्त कार्यक्रमों की भाषा सामान्यतः हिन्दी के मानक रूपों का अनुसरण करती है, किंतु विषयवस्तु एवं प्रयोजनों के अनुरूप इनकी भाषा शैली तथा विविध ध्वनि–प्रभावों में पर्याप्त विविधता होती है। विज्ञापनों एवं मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों की भाषा काव्यात्मक तथा लक्षणा–व्यंजना प्रधान होती है। इसमें भाषा के बहुविध नवीन बिम्बात्मक एवं प्रतीकात्मक प्रयोग होते हैं तथा भाषा–शैलीगत विचलनों का अत्यधिक प्रयोग होता है। नवभाषाई प्रवृत्तियों के तहत, हिन्दी के विभाषा, अपभाषा एवं मिश्रित भाषा स्वरूपों के दर्शन होते हैं। सूचना प्रधान कार्यक्रमों की भाषा हिन्दी के मानकीकृत एवं व्याकरणिक नियमों के अनुरूप होती है। इसके साथ ही इसमें क्षेत्रीय भाषा–प्रयोग तथा अनुवादित भाषाई लक्षणों की भी प्राप्ति होती है। आध्यात्मिक कार्यक्रमों की भाषा, प्रस्तोता की भाषा अथवा कार्यक्रम के अनुरूप जनसामान्य की भाषा होती है। यह मानक, संस्कृतनिष्ठ तथा/अथवा क्षेत्रीय भाषाशैली के कलेवरों से सज्जित होती है। सम्प्रति, अपने विविध स्वरूपों तथा भाषा–ध्वनि प्रयोगों से नवीन भाषाई आयाम गढ़ते, दूरदर्शन में हिन्दी की प्रयोजनमूल प्रयुक्तियों का संसार अत्यंत समृद्ध है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तरुण, डॉ0 रमेश : जनसंचार माध्यम और विकास, कला मन्दिर प्रकाशन, संस्करण 2004
2. डॉ0 हरिमोहन : रेडियो और दूर–दर्शन पत्रकारिता'; तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008
3. मिश्र, राजेन्द्र एवं ईशिता मिश्र : दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन, तक्षशिला प्रकाशन, संस्करण–2008

4. चतुर्वेदी, जगदीश्वर : जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा (रेडियो, टेलीविजन, केबल टेलीविजन के संदर्भ में) अनामिका पब्लिशर्स, संस्करण 2000
5. तरुण, डॉ0 रमेश : जनसंचार माध्यम और विकास, कला मन्दिर प्रकाशन, संस्करण 2004
6. पातंजलि, डॉ0 प्रेमचंद : आधुनिक विज्ञापन, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1997
7. झाल्टे, दंगल : प्रयोजनमूलक हिन्दीः सिद्धान्त और प्रयोग वाणी प्रकाशन
8. सिंह प्रो0 दिलीप; अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (आलेख) 'भाषा' द्वैमासिक पत्रिका केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, मा0 सं0 वि0 मंत्रालय ISSN 0523-1418 वर्ष 41 अंक 2, नवंबर–दिसंबर 2001
9. चौहान, जसपाली : प्रयोजनमूलक हिंदी : वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा रूप, गवेषणा पत्रिका; अंक 98/2011
10. शर्मा, आचार्य देवेन्द्रनाथ एवं दीप्ति शर्मा : भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन
11. सिंह, डॉ0 दिनेश प्रसाद : प्रयोजनमूलक हिन्दी और प्रत्रकारिता, वाणी प्रकाशनः 2007